# छत्तीसगढ़ भारती

## कक्षा – 7

सत्र 2019–20

### DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

### मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

**DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।**

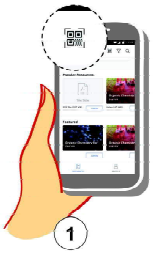


पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

### डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

(1) QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

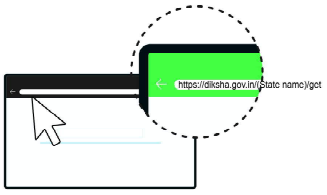

(2) ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

(3) सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

(4) प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर**

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष 2019

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग– डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन

**मुख्य समन्वयक** श्री उत्पल कुमार चक्रबर्ती

**विषय समन्वयक** डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

**संपादक** डॉ. सी.एल. मिश्र, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

**लेखक–मंडल**

| हिन्दी | छत्तीसगढ़ी |
|---|---|
| डॉ. सी.एल. मिश्र, श्री बी.आर साहू,<br>डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, श्री राजेंद्र पांडेय,<br>श्री गजानंद प्रसाद देवांगन,<br>श्री दिनेश गौतम, श्रीमती उषा पवार,<br>डॉ. (श्रीमती) रचना अजमेरा,<br>श्री अजय गुप्ता, श्री विनय शरण सिंह<br>डॉ. रचना दत्त, श्री कार्तिकेय शर्मा | डॉ. जीवन यदु, डॉ. पीसी लाल यादव,<br>श्री विनय शरण सिंह, डॉ. मांघी लाल यादव,<br>श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव,<br>श्री पाठक परदेशी, श्री गणेश यदु, श्री कुबेर साहू,<br>श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी<br>श्रीमती मैना अनंत |

**आवरण पृष्ठ** हेमंत अभयंकर

**लेआउट डिजाइन** रेखराज चौरागड़े

**चित्रांकन** रेखराज चौरागड़े, राजेन्द्र सिंह ठाकुर, विद्याभवन, उदयपुर, समीर श्रीवास्तव, गिरीधारी साहू

(इस पुस्तक में जिन रचनाकारों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, उन सबके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति राज्य शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर अपना हार्दिक आभार प्रकट करता है।)

**प्रकाशक**

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

**मुद्रक**

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – .....

# प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उन पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दात्यिव सौंपा गया था। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवनिर्मित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षों तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत उन्हें राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 और 7 की पाठ्यपुस्तकों को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय संस्था के विशेषज्ञों ने क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी. ,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी, कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुक्रम और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर, प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली एवं पाठ आधारित अभ्यास के लिए अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन की विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मण्डल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संगृहीत की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

# शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो, भारती 7 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किन्तु वह राज्य के कुछ सीमित विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र–परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों को राज्य और राज्य के बाहर के शिक्षाविदों एवं राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरान्त उस संस्करण में आवश्यक संशोधन करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

आपको बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता हैं। आप जानते हैं कि बच्चा सीखने की क्षमता लेकर स्कूल आता है। 11–12 वर्ष की आयु में तो यह क्षमता चरम सीमा पर रहती है। वे अधिक–से–अधिक जानना चाहते हैं। आवश्यकता यह नहीं कि उन्हें विषय से सम्बन्धित जानकारी दी जाए, आवश्यकता इस बात की है कि उनकी समझने की शक्ति का भरपूर विकास हो। बच्चे पढ़कर स्वयं समझ सकें और सुनी व पढ़ी बातों की सार्थक विवेचना कर सकें। बोलने के साथ–साथ लिखने की भी उनकी क्षमता का विकास हो। बच्चे औपचारिक एवं अनौपचारिक संदर्भ में बातचीत करना सीख जाएँ, संदर्भानुसार लिखित व मौखिक भाषा का प्रयोग कर सकें, यह आपको परीक्षण करना है।

आपको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। प्रत्येक शिक्षक अपने –अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली होती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि आप हमारे निम्नलिखित सुझावों पर विचार करेंगे। यदि आप इन सुझावों को उपयोगी समझें तो इन्हें अपनाएँगे।

**1. पाठ की तैयारी–** किसी पाठ को पढ़ाना प्रारंभ करने से पूर्व यह अधिक उचित है कि पाठ की पृष्ठभूमि का निर्माण करें। इससे विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाता है और उन्हें पाठ को समझने में सहायता भी मिल जाती है। पाठ को प्रारंभ करने के पूर्व विद्यार्थियों से पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न पूछिए जिनके उत्तरों से उनके पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाए और उन्हें पाठ को समझने में भी सहायता मिले। उदाहरण के लिए 'रात का मेहमान' शीर्षक पाठ को पढ़ाने के पूर्व स्वाधीनता–संग्राम के संबंध में, क्रांतिकारी आन्दोलन के संबंध में, क्रांतिकारियों के संबंध में पूछें, चर्चा करें। 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र' शीर्षक पाठ पढ़ाने के पूर्व नेताजी अैर लोकमान्य तिलक के संबंध में पूछें, चर्चा करें, बताएँ।

कविता के पाठ पढ़ाने के संबंध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इसे पढ़ाने का ढंग कहानी, निबंध, चरित्र आदि गद्य–पाठों से बिल्कुल भिन्न है। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सौंदर्य–बोध और रसानुभूति कराना है। विद्यार्थी कविता पढ़कर आनंदित हों, साथ ही देश, प्रकृति, पशु–पक्षियों, उपस्थित मानकों आदि के प्रति उनके मन में सद्भावना और प्रेम पैदा हो।

**2. नवीन शब्द परिचय–** प्रायः सभी पाठों मे कुछ नवीन शब्दों का प्रयोग होता ही है। भाषा शिक्षण का यह एक उद्देश्य भी है कि प्रत्येक कक्षा मे विद्यार्थियों को कुछ नवीन शब्द अवश्य बताए जाएँ। बच्चों ने कोई नया शब्द सीख लिया है, यह हम तब कहेंगे जब वे उसका सही प्रयोग कर सकें। शब्द का अर्थ बताने के बाद अलग–अगल विद्याथियों से आप उसका प्रयोग कराएँ।

इस पुस्तक में शब्दार्थ पाठ के अंत में न देकर पुस्तक के अंत में शब्द–कोश के रूप में दिए गए हैं। इससे विद्यार्थियों को असली शब्द–कोश देखने की पद्धति ज्ञात होगी। पुस्तक के शब्द कोश की एक विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक वर्ण के बाद कुछ अलग शब्द दिए गए है, ये शब्द ऐसे हैं जिन्हें वे पूर्व की कक्षाओं में पढ़ चुके हैं, और उन्हें उन शब्दों का अर्थ मालूम है। इन शब्दों को क्रमानुसार लिखना है, साथ ही उनके अर्थ भी लिखने हैं। इसके लिए रिक्त स्थान छोड़े गए है। जहाँ आवश्यकता हो, आप विद्यार्थियों का मागदर्शन करें।

**3. वाचन**–वाचन की शुद्धता पर भी आपको ध्यान देना आवश्यक होगा। सब को यदि 'शब', 'छात्र' को 'क्षात्र' और 'कर्म' को 'क्रम' पढ़ा जाए तो समझने वाला क्या समझेगा? अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों का उच्चारण शुद्ध हो। हमारा सुझाव है कि विद्यार्थियों से वाचन कराने के पूर्व आप अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें, फिर विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ। इससे विद्यार्थियों को शब्दों के सही उच्चारण करने, बलाघात, विराम–चिह्नों के अनुसार पढ़ने में सहायता मिलेगी। कौन कितनी शीघ्रता से वाचन करता है, यह जाँच करना अच्छे वाचन का लक्षण नहीं माना जा सकता। वाचन कराते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि वाचन करने का अवसर समान रूप से सभी विद्यार्थियों को मिले। जो विद्यार्थी वाचन में पिछड़े हैं, उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष ले जाने का प्रयास करें। विद्यार्थियों को पठन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएँ तथा पठन की पद्धतियों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी करें।

**4. विषयवस्तु**– पाठ पढ़ाने के पश्चात् आपको यह देखना है कि विद्यार्थियों ने उस पाठ को कितना आत्मसात किया है। इसके लिए पुस्तक में विद्यार्थी द्वारा परस्पर पाठ पर आधारित मौखिक प्रश्न पूछने की विधि सुझाई गई है। इसके लिए विद्यार्थी एक–दूसरे समूह से प्रश्न पूछें, बाद में आप भी मौखिक प्रश्न पूछें। इससे जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में मौखिक प्रश्न पूछने की दक्षता विकसित होगी, वहीं विषय– वस्तु को समझने में भी उन्हें सहायता मिलेगी।

**5. भाषा**– भाषा संबंधी दक्षताओं के विकास के लिए पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं। आप ऐसे कुछ अन्य अभ्यास देकर उनकी दक्षताओं को विकसित कर सकते हैं।

**6. योग्यता विस्तार के क्रियाकलाप**– भाषा ज्ञान, एकाकी न रहे, इसके लिए आवश्यक है कि भाषायी योग्यता के साथ अन्य विषयों से उसका संबंध स्थापित किया जाए। इसके लिए योग्यता विस्तार शीर्षक में कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं। समय–समय पर कक्षा में वादविवाद प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, चित्र निर्माण की प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, ऐतिहासिक या मनोरंजक स्थलों का भ्रमण कराके उनके संबंध मे लेख–लिखना आदि क्रियाकलापों से विद्यार्थियों के भाषायी कौशल में अभिवृद्धि हो सकती है।

**7.** इस पुस्तक में हमने शब्द–कोश के रूप में शब्दार्थ दिए हैं बीच–बीच में कुछ रिक्त स्थान छोड़े गए हैं जिनमें चौखाने में से शब्द छाँटकर उचित स्थान पर भरने हैं। विद्यार्थी इस गतिविधि को गंभीरता–पूर्वक करें– यह देखना आपका उत्तरदायित्व है। ऐसे शब्दों के अर्थ यदि उन्हें न आएँ तो आप बता सकते हैं।

आप सबको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। आपके इस लंबे अनुभव से विद्यार्थी निस्संदेह लाभान्वित होते हैं। हमारे बताए हुए उपर्युक्त सुझावों पर अमल करने से हो सकता है आपकी शिक्षण–कला में इससे कुछ लाभ हो। यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

# विषय–सूची


| क्र. | पाठ | विधा | रचयिता | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कुछ और भी दूँ | कविता | श्री रामावतार त्यागी | 1–3 |
| 2. | प्रेरणा के पुष्प | प्रेरक प्रसंग | लेखक –मंडल | 4–7 |
| 3. | विद्रोही शक्तिसिंह | कहानी | श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' | 8–13 |
| 4. | मौसी | कहानी | श्री भीष्म साहनी | 14–19 |
| 5. | सरद रितु आ गे | कविता | पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' | 20–22 |
| 6. | सदाचार का तावीज़ | व्यंग्य | श्री हरिशंकर परसाई | 23–28 |
| 7. | रात का मेहमान | चरित्र | संकलित | 29–34 |
| 8. | भिखारिन | कहानी | गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगाोर | 35–42 |
| 9. | त्याग मूर्ति ठाकुर प्यारेलाल | जीवनी | लेखक–मंडल | 43–47 |
| 10. | सितारों से आगे | चरित्र | लेखक–मंडल | 48–52 |
| 11. | कोई नहीं पराया | कविता | श्री गोपालदास 'नीरज' | 53–56 |
| 12. | प्रेरणा स्रोत मेरी माँ | प्रेरक प्रसंग | लेखक–मंडल | 57–61 |
| 13. | सुभाषचन्द्र बोस का पत्र | पत्र | नेताजी सुभाष चन्द्र बोस | 62–66 |
| 14. | भारत बन जाही नंदनवन | कविता | श्री कोदूराम 'दलित' | 67–69 |
| 15. | शतरंज में मात | एकांकी | श्रीयुत् श्रीप्रसाद | 70–78 |
| 16. | काव्य–माधुरी | कविता | सूर,तुलसी,मीरा,रसखान, धरमदास | 79–82 |
| 17. | वर्षा बहार | कविता | श्री मुकुटधर पाण्डेय | 83–85 |
| 18. | मितानी | लोककथा | लेखक–मंडल | 86–89 |
| 19. | शहीद बकरी | कहानी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 90–93 |
| 20. | लक्ष्य–बेध | निबंध | श्री रामनाथ 'सुमन' | 94–98 |
| 21. | सुवागीत | निबंध | लेखक–मंडल | 99–103 |
| 22. | सुब्रह्मण्य भारती | चरित्र | लेखक–मंडल | 104–110 |
| | शब्दकोश | | | 111–122 |


4Y8GS8

**नोट–** क्रमांक – 5, 9, 14, 18, 21 छत्तीसगढ़ी पाठ है।